पारिभाषिक शब्दों का निर्णायक पक्ष

डॉ0 तापस पाल
सांग एंड ड्रामा डिवीजन
कोलकाता –700001

उत्तर भारतीय संगीत की आविर्भाव एवं विकास भारत वर्ष की उत्तरी भाग में ही हुआ था। इस संगीत पद्धति का पचसण, विस्तार, भारत वर्ष के उत्तरी भाग के राज्य जैसे – उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली आदि में ही हुआ, इसलिए इस संगीत की साहित्य, प्रयोगिक नामकरण, उत्सनिय संगीत का पनपना आदि सभी पर असर आंचलिक संस्कृति भाषा का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। जैसे गायन की घराने बने तो है पर सभी घराने उत्तर भारतीय शहरो का नाम से बने जैसे–ग्वालियर, आगरा, किराना, आदि उसी प्रकार कथक नृत्य के घराने बने , लखनऊ, जयपुर, बनारस आदि। तबले के घराने बने दिल्ली, आसराड़ा, लखनऊ,फर्रूखाबाद, बनारस एवं पंजाब।

यहां कहने का तात्पर्य यह है कि, चूंकि उत्तर भारतीय संगीत का आविर्भाव प्रयोग, प्रचलन, भारत के उत्तर भाग मे ही प्रथम समय में हुआ एवं परवर्ती समय में यह संगीत देश के अन्यत्र अनन्य शाखा फैलाया, चूंकि संगीत ने अपना आविर्भाव का समय भारत के उत्तर भाग में रहा है, इसलिए इस संगीत के नाम से नामांकन किया गया। इस संगीत की परिभाषिक शब्दावल उत्तर भारत की भाषा से प्रभावित हुआ एवं सारा नामकरण उत्तर भारतीय साहित्य से ही निकाला है। इस संगीत की पारिभाषिक शब्दावलियों को हम अगर गहराई से अध्ययन करें तो उपरोक्त बात साफ समझ आ जायेगी। संगीत की इन पारिभाषिक शब्दावलियों को अगर सटीक मूल्यांकन करना हो, ता हमें उत्तर भारतीय प्रचलित भाषाओं को समझना होगा एवं उन भाषा के साथ इन पारिभाषिक शब्दावली को जोड़कर देखना होगा।

तबले में प्रयोग होने वाले जितने भी पारिभाषिक शब्दावली है, वे सभी उत्तर भारतीय भाषा हिन्दी, उर्दू, फारसी से ही आगत हैं। इसलिए हमें इन पारिभाषिक शब्दों को समझने से पहले उपरोक्त बात को समझना पड़ेगा, तो ही हम उसे न्याय दिला पायेंगे।

कहने का तात्पर्य यह है कि, उत्तर भारतीय संगीत, वर्तमान समय में पूरे विश्व में अपना प्रतिभा पा चुका है। उत्तर भारत को छोड़ बाकी अन्य प्रान्तों में उपराक्त विषय की शुद्धता को लेकर प्रश्नवाची है। कारण है, आंचलिक भाषाओं का प्रभाव, आंचलिक भाषा के प्रकोप से बचने के लिए हमें सतर्क रहा चाहिए। जिससे हम पारिभाषिक शब्दावलियों का शुद्धता को बचा सकते हैं।